केन्द्रीय विद्यालय, कंकड़बाग, पटना के स्वर्णजयंती समारोह_में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(स्थान–केन्द्रीय विद्यालय, कंकड़बाग, पटना दिनांक–12.09.2016, 12:00 बजे दिन में)

केन्द्रीय विद्यालय, कंकड़बाग, पटना के 'स्वर्ण जयंती समारोह' में प्रमुख रूप से उपस्थित सुलभ इन्टरनेशनल के संस्थापक श्री बिन्देश्वर पाठक जी, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अधिकारी, श्री एम॰एस॰ चौहान जी, केन्द्रीय विद्यालय, कंकड़बाग के प्राचार्य, श्री सुधाकर सिंह जी, समारोह में उपस्थित बुद्धिजीवीगण, विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण देवियों एवं सज्जनों !

केन्द्रीय विद्यालय कंकड़बाग के 'स्वर्ण जयंती समारोह' में आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है । किसी भी शैक्षणिक संस्था द्वारा 50 वर्षों की अपनी विकास–यात्रा पूर्ण कर लेने के बाद, मनाया जाने वाला उसका 'स्वर्ण जयंती समारोह' वह सुअवसर होता है, जब संस्था अपनी उपलब्धियों का आत्म–मूल्यांकन करती है और साथ ही अपनी आगामी चुनौतियों पर विचार करते हुए आगे के लिए अपनी कार्य–योजना तैयार करती है । मुझे बताया गया है कि केन्द्रीय विद्यालय, कंकड़बाग ने 50 वर्षों की अपनी प्रगति–यात्रा के दौरान कई गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की है । यह विद्यालय पटना सम्भाग का एक ऐसा आदर्श विद्यालय है, जहाँ से उत्तीर्ण हो चुके कई छात्र आज अभियंत्रण सेवा, प्रशासनिक सेवा, चिकित्सा सेवा आदि सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत होकर इस

विद्यालय ही नही, बल्कि भारतवर्ष का नाम रौशन कर रहे हैं । ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के अतिरिक्त इस विद्यालय के छात्र, कला–संस्कृति एवं खेलकूद की दुनियाँ में भी अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहें हैं । विद्यालय के कई शिक्षकों को राष्ट्रपति पुरस्कार और राष्ट्रीय– प्रोत्साहन–पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं ।

केन्द्रीय विद्यालय का सूत्रवाक्य है–''तत् त्वं पुषन् अपावृणु''। 'ईशावास्य उपनिषद्' से ग्रहण किये गये इस संस्कृत वाक्यांश का अर्थ है कि ''हे सबके पोषक! तू उस आवरण को हटा और सत्य को प्रकट कर, जिससे कि साधकों को उस सत्य का दर्शन हो सके।'' आशा है, आप सब विद्यार्थीगण उस सत्य के दर्शन के प्रति सदा सचेष्ट रहते होगें और आपके गुरू भी सत्य की इस खोज में निरंतर आपको कुशल मार्ग–निर्देश प्रदान करते होंगे।

प्यारे विद्यार्थियों! 21वीं सदी ज्ञान और तकनीक पर आधारित सदी है । हर एक इंसान को आज इतना ज्ञान और तकनीकी कौशल पाने का अवसर जरूर मिलना चाहिए कि अपने विवेक और कौशल से वह समाज को बेहतर बनाने में अपना योगदान दे सके। आज हमारे शिक्षण–संस्थानों को महज सामान्य शिक्षा देने के बजाय, एक ऐसे ज्ञान का केन्द्र बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए, जहाँ शिक्षा के साथ–साथ छात्रों को हूनरमंद भी बनाया जा रहा हो । आज भारत की आबादी के लगभग 54 फीसदी लोगों की उम्र 25 वर्ष से कम उम्र के युवाओं की

है । मतलब यह कि हमारा देश भारतवर्ष एक युवा राष्ट्र है । इस युवा राष्ट्र के सपनों को साकार करने की जिम्मेवारी आप किशोर–किशोरियों पर ही निर्भर है।

देश–काल में परिर्वतन के साथ–साथ आज शिक्षा का स्वरूप भी बदला है । विश्व की जरूरतों और चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें ऐसी शिक्षा– व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसका उद्देश्य शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक–तीनों प्रकार की क्षमताओं का समन्वित विकास और राष्ट्रीय आदर्शों के अनुरूप चरित्र का निर्माण हो । शिक्षा के लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि– ''जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नही बना सकती, मनुष्य में चरित्र–बल, परोपकार की भावना तथा सिंह के समान साहस नही ला सकती, वह भी कोई शिक्षा है क्या? आज हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़े होना सीखें।'' स्वामी जी के इन विचारों का सारांश यह है कि चरित्र–निर्माण और स्वावलंबन का भाव विकसित करना–इस आधुनिक शिक्षा–व्यवस्था का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।

प्यारे विद्यार्थियों! आप जीवन में अगर आगे बढ़ना चाहते हैं, तो आपको पहले अपना लक्ष्य निर्धारित करना होगा और इस लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए आपके पास तीन चीजों का होना बेहद जरूरी है ।

ये तीन चीजें हैं–तीव्र इच्छाशक्ति, कठोर परिश्रम और दृढ़निश्चय का भाव । कोई भी लक्ष्य छोटा या बड़ा नही होता, सभी लक्ष्य अपनी सार्थकता में महत्वपूर्ण होते हैं । इस संदर्भ में मैं महान वैज्ञानिक आइन्सटाईन, जो 'Theory of relativity' के आविष्कारक थे, के जीवन से जुड़ी एक घटना बताना चाहता हूँ । आइन्सटाईन एक बार ट्रेन से अपने देश में यात्रा कर रहे थे। टिकट–निरीक्षक यात्रियों की टिकटें चेक कर रहा था । उसने आइन्सटाईन के भी पास पहुँचकर उनसे टिकट दिखाने को कहा । आइन्सटाईन ने अपनी जेबों को टटोला तो टिकट गायब था। बाद में उसने आइन्सटाईन को पहचान लिया और कहने लगा–''सर! मैने आपको पहचान लिया है, आप मेरे देश के श्रेष्ठ वैज्ञानिक आइन्सटाईन हैं। आप कभी भी रेल–यात्रा संबंधी कानून का उल्लंघन नही कर सकते। आप निश्चिन्त रूप से यात्रा करें।'' किन्तु, आइन्सटाईन ने कहा–''भाई! मेरी मुसीबत दूसरी है। टिकट अगर कहीं खो गया हो, तो फिर मैं यह कैसे पता कर पाऊँगा कि मुझे ट्रेन से किस स्टेशन पर उतरना है।'' प्यारे बच्चों, आपको इस घटना पर हँसी आ सकती है कि इतने बड़े वैज्ञानिक को भला यह बात कैसे नहीं याद रही कि–उसे जाना कहाँ है? लेकिन यहाँ समझने वाली बात यह है कि आइन्सटाईन जैसे वैज्ञानिक भी अपने एक छोटे से लक्ष्य को लेकर अधिक गंभीर नही थे और इसीलिए उन्हें एक मुसीबत का सामना करना पड़ा। मतलब यह कि हम सबको भी अपने लक्ष्य के प्रति सदैव एकाग्रचित्तता रखनी चाहिए।

आज आपके विद्यालय के 'स्वर्ण जयंती समारोह' में मैं पुनः विवेकानन्द जी को उद्धृत करते हुए कहना चाहूँगा कि–''उतिष्ठ, जाग्रत, प्राप्य, वरान्निबोधत।'' अर्थात उठो, जगो, प्राप्त करो, और प्राप्त ज्ञान से दूसरे को भी प्रबोधित करो। मैं आज के सुअवसर पर समस्त विद्यालय–परिवार को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ । आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद ।

जय हिन्द!

.....

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।